International Research Journal of Education and Technology
Peer Reviewed Journal
ISSN 2581-7795

Hindi Bhasha me Awadhi Bhasha Ka Aek Mulyankan

Dr. Geeta Dubey

Ass. Pro. (HINDI)

Brahmawart P. G. College

mandhana, Kanpur Nagar-209217

हिंदी भाषा में अवधी भाषा का एक मूल्याकंन

डॉ गीता दुबे
सहायक आचार्य
बह्मावर्त (पी0जी0) कॉलेज,
मंधना, कानपुर–209217
ई–मेल
dr.dubey74geeta@gmail.com

शोध सार

अवधी, जिसे औधी भी कहा जाता है, एक इंडो–आर्यन भाषा है जो उत्तर प्रदेश के अवध क्षेत्र में बोली जाती है और पश्चिमी नेपाल के तराई क्षेत्र में भी बोली जाती है। अवध का नाम अयोध्या से जुड़ा है, जो प्राचीन शहर है और हिन्दू भगवान राम की जन्मभूमि के रूप में मानी जाती है। यह भाषा ब्रज के साथ एक प्रमुख साहित्यिक वाहन के रूप में व्यापक रूप से उपयोग की गई थी, जो धीरे–धीरे 19वीं सदी में मानक हिंदी के विकास में योगदान करने लगी। हालांकि मानक हिंदी से अलग, यह आज भी केन्द्रिय उत्तर प्रदेश के कई जिलों में अपने विशेष रूप में बोली जाती है। भारत सरकार द्वारा इसे हिंदी की एक बोली माना जाता है, और अवधी बोली जाने वाले क्षेत्र को हिंदी भाषा के क्षेत्र का हिस्सा माना जाता है क्योकि उनमें सांस्कृतिक समानता पाई जाती है। इसके परिणामस्वरूप, शिक्षा के लिए और प्रशासनिक और आधिकारिक उद्देश्यों के लिए हिंदी का उपयोग किया जाता है और इसका साहित्य हिंदी साहित्य के दायरे में आता है। भारतीय साहित्य में रामचरितमानस जैसे कुछ सबसे सांस्कृतिक रूप में महत्त्वपूर्ण काव्य अवधी में लिखे गए हैं।

अवधी भाषा का सांस्कृतिक प्रभाव

भारत सरकार द्वारा इसे हिंदी की एक बोली माना जाता है, और अवधी बोली जाने वाले क्षेत्र को हिंदी भाषा के क्षेत्र का हिस्सा माना जाता है, क्योंकि उनमें सांस्कृतिक समानता पाई जाती है। इसके परिणामस्वरूप, शिक्षा के लिए और प्रशासनिक और आधिकारिक उद्देश्यों के लिए हिंदी का उपयोग

© 2024, IRJEdT Volume: 06 Issue: 08 | Aug-2024

किया जाता है, और इसका साहित्य हिंदी साहित्य के दायरे में आता है। भारतीय साहित्य में रामचरितमानस जैसे कुछ सबसे सांस्कृतिक रूप में महत्त्वपूर्ण काव्य अवधी में लिखे गये हैं।

अवधी के वैकल्पिक नामों में बैसवारी बैसवारा उपक्षेत्र के बाद(और कभी–कभी अस्पष्ट पूर्बी, जो कि ''पूर्वी'' का शाब्दिक अर्थ है, और कोसली प्राचीन कोसल राज्य के नाम पर शामिल है।

भौगोलिक विवरण–

अवधी भारत के उत्तर के मध्य भाग में फैले अवध क्षेत्र में प्रमुख रूप से बोली जाती है, साथ ही गंगा–यमुना डोआब के निचले हिस्से में भी। पश्चिमी में, यह पश्चिमी हिंदी, विशेष रूप से कन्नौजी और बुदेली द्वारा सीमित है, जबकि पूर्व में बिहारी समूह की पूर्वी इंडो–आर्यन भाषा भोजपुरी बोली जाती है। उत्तर में यह नेपाल के देश द्वारा सीमित है और दक्षिण में बघेली से, जो अवधी के साथ बड़ी रूप से समानता रखती है।

उत्तर प्रदेश के उत्तर और मध्य भाग के निम्नलिखित जिलों में अवधी भाषा का प्रयोग होता है।

- कानपुर (कन्नौजी के साथ)
- लखीमपुर खीरी
- सीतापुर
- हरदोई (कन्नौजी के साथ)
- उन्नाव
- फतेहपुर
- बाराबंकी
- लखनऊ
- रायबरेली
- अमेठी
- बहराइच ये जिले अवधी भाषा के अंदर आते है।

उत्तर प्रदेश के पूर्वी हिस्से में अवधी भाषा एक विशेष बोली में बदल जाती है, जिसे ''पूर्वी मानक अवधी '' कहा जाता है। यह क्षेत्र पूर्वांचल के भोजपुरी बोलने वाले जिलों के साथ सीमित होता है। इस क्षेत्र में निम्नलिखित जिले शामिल हैः

- अयोध्या
- अंबेडकर नगर
- प्रयागराज
- जौनपुर (पश्चिमी हिस्से)
- मिर्जापुर
- भदोही
- सुल्तानपुर (पश्चिमी हिस्सा)

© 2024, IRJEdT Volume: 06 Issue: 08 | Aug-2024

- प्रतापगढ़
- गोंडा
- बस्ती
- सिद्धार्थनगर (पश्चिमी हिस्से)
- कौशम्बी

नेपाल के भाषा आयोग ने लुम्बिनी प्रांत में थारू और अवधी को आधिकारिक भाषा के रूप में सिफारिश किया है। अवधी नेपाल में दो प्रातों में बोली जाती है:

1. लुम्बिनी प्रांत
2. बाँकें जिला
3. बंर्दिया जिला
4. डांग जिला
5. कपिलवस्तु जिला
6. सुदूरपश्चिम प्रांत
7. कैलाली जिला
8. कंचनपुर जिला

वर्गीकरण

अवधी एक इंडो–यूरोपीय भाषा है और यह इंडो–ईरानी भाषा परिवार के इंडो–आर्यन उप–समूह में आता है। इंडो–आर्यन बोलियों के संघटन में, यह भाषाओं के पूर्व–मध्य क्षेत्र में आती है और अक्सर पूर्वी हिंदी के रूप में मान्यता प्राप्त करती है। यह सामान्य रूप में माना जाता है कि अर्धमागधी का एक पुराना रूप, जो सौरसेनी के साथ भागीदारी करता था और मगधी प्राकृत के साथ भागीदारी करता था, अवधी की आधार हो सकता है

अवधी का सबसे निकट संबंध बघेली से है, क्योंकि जीनियोलॉजिकली दोनों एक ही अर्ध–मागधी से उत्पन्न होते हैं। अधिकांश प्राचीन भारतीय भाषाविद ने बघेली को केवल 'अवधी के दक्षिणी रूप में माना लेकिन हाल के अध्ययनों में बघेली को अवधी के साथ बराबर एक अलग बोली के रूप में स्वीकार किया गया है, और यह केवल उसकी उप–बोली नही है।

साहित्य

अवधी भाषा की साहित्यिक विभाजन के बारे में जानकारी। अवधी भाषा उत्तर भारत में महाकाव्य कविता के लिए एक माध्यम बन गई थी। इसका साहित्य मुख्य रूप से दो भागों में विभाजित होता है: भक्तिकाव्य (भक्तिपूर्ण कविता) और प्रेमाख्यान (रोमांटिक कहानियाँ)।

भक्तिकाव्य

भक्तिकाव्य संभावित रूप में, किसी भी इंडो–आर्यन भाषा में सबसे महत्त्वपूर्ण काम भक्त–कवि तुलसीदास का रामचरितमानस (1575 ई0) है, जो दोहा–चौपाई छंद में लिखा गया था। इसकी कहानी अधिकांश रूप से मूल रामायण (वाल्मीकि द्वारा लिखी) या अध्यात्म रामायण (जो संस्कृत में है) से अवगत है। महात्मा गाँधी ने रामचरितमानस को सभी भक्तिसाहित्य की सबसे महान पुस्तक '' कहा और पश्चिमी

© 2024, IRJEdT Volume: 06 Issue: 08 | Aug-2024

अनुवेक्षकों ने इसे '' उत्तर भारत की बाइबल '' कहा। यह कभी–कभी ' तुलसीदास रामायण ' या सिर्फ ' रामायण' के रूप में भी जाना जाता है।

तुलसीदास की रचनाएँ, रामचरितमानस, रामललानहछू, बरवै रामायण, रामाज्ञा प्रश्न, हनुमान चालीसा, पार्वती मंगल और जानकी मंगल भी अवधी में लिखी गई हैं।

अंडकोस प्रति प्रति निज रूपा।

देखेउँ जिनस अनेक अनूपा।।

अवधपुरी प्रति भुअन निनारी।

सरजू भिन्न भिन्न नर नारी।।

सिंधु तीर एक भूधर सुंदर।

कौतुक कूदि चढ़ेउ ता– ऊपर।।

बार–बार रघुवीर सँभारी।

तरकेउ पवनतनय बल भारी।।

हरि! तुम बहुत अनुग्रह कीन्हों।

साधन नाम बिबुध दुरलभ तनु, मोहि कृपा करि दीन्हों।। ।।

कोटिहुँ मुख कहि जात न प्रभुके, एक एक उपकार।

तदपि नाथ कछु और माँगिहौं, दीजै परम उदार।। ।।

विषय–बारि मन–मीन भिन्न नहिं होत कबहुँ पल एक।

ताते सहौं बिपति अति दारून जनमत जोनि अनेक।। ।।

कृपा डोरि बनसी पद अंकुस, परम प्रेम–मृदु चारो।

एहि बिधि बेगि हरहु मेरो दुख कौतुक राम तिहारो।। ।।

हैं स्तुति बिदित उपाय सकल सुर, केहि केहि दीन निहोरै।

तुलसीदास यहि जीव मोह रजु जोइ बाँध्यो सोइ छोरै।। ।।

भागवत पुराण के 'दशम स्कंध' का पहला हिंदी लोकभाषा का अनुवाद, जिसे ''हरिचरित'' कहा जाता है, लालचदास द्वारा किया गया था, जो हस्तिग्राम (वर्तमान दिन के हथगांव, रायबरेली के पास) से थे, 1530 ई0 में समाप्त हुआ था। यह बहुत लंबे समय तक व्यापक रूप से प्रसारित हुआ और पाठ के अनेक हस्तलिखित प्रतियाँ पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार, मालवा, और गुजरात तक पहुँच गई है, जो कैथी लिपि में लिखी गई थीं।

© 2024, IRJEdT Volume: 06 Issue: 08 | Aug-2024

ईश्वरदास (दिल्ली के) की सत्यवती (करीब 1501) सिकंदर लोदी के शासनकाल में और लालदास की 'अवधबिलास' (1700 ई0) भी अवधी में लिखी गई थीं।

अवधी भक्त संतों के काव्यों में अवधी महत्त्वपूर्ण घटक के रूप में प्रकट हुआ, जैसे की कबीर, जिन्होने एक भाषा का उपयोग किया, जिसे अक्सर कई लोकभाषाओं का एक पंचमेल खिचड़ी या 'एक मिश्रण' कहा जाता है कबीर का प्रमुख काव्य 'बीजक' की भाषा मुख्य रूप से अवधी है।

प्रेमाख्यान

अवधी भाषा ने 14वीं सदी के अंतिम तिमाही से पूर्वी सूफियों की पसंदीदा साहित्यिक भाषा भी बनी। यह सूफियों के रोमांटिक किस्से थे, जो पर्सियन मसनवी के पैटर्न पर बने थे, जो सूफी तत्वशास्त्र में डूबे हुए थे, लेकिन यह एक पूरी भारतीय पृष्ठभूमि में स्थित थे, जिसमें भारतीय लोककथाओं से सीधे उधार लिए गए अनेक मोटिफ थे। अवधी भाषा में ऐसे पहले प्रेमाख्यान का नाम 'चंदायन' 1379 ई0 था जिसे मौलाना दाऊद ने लिखा था। इस परंपरा को जायसी ने आगे बढ़ाया।

जायसी के अन्य प्रमुख काव्य जैसे कन्हावत, अखरावट और आखरी कलाम, भी अवधी में लिखे गये हैं। अवधी काव्य मिरिगावती करीब 1503 या जादुई हिरण जिसे शेख कुतुबन सुहरवर्दी ने लिखा था, वे जौनपुर के सुल्तान हुसैन शाह शर्की के दरबार में जुड़े एक विशेषज्ञ और कहानीकर्ता थे।

मैं आपको अपने महान नगर के बारे में बताउंगा, जो सदैव सुंदर जैस है। सतयुग में यह एक पवित्र स्थल था, फिर इसे '' बगीचो का नगर'' कहा जाता था। त्रेता युग आया, और जब द्वापर आया, तो यहां एक महान ऋषि भूंजराज थे। तब 88,000 ऋषिगण यहां बसे थे, और यहां 84 तालाब थे। उन्होने मजबूत घाट बनाने के लिए ईंटें बनाई और 84 कुआं खोदे। यहां वहां उन्होने सुंदर किले बनाए, रात्रि में वे आकाश में तारों की तरह दिखते थे। उन्होने कई बाग भी बनाए, जिनमें मंदिर भी थे।

वे वहां तपस्या कर रहे थे, सभी मानव अवतार। वे होम और जप करके इस जगत को पार कर गए।

आधुनिक भारत

आधुनिक भारत में अवधी साहित्य के अधिकांश योगदान लेखकों जैसे श्री रामभद्राचार्य जी , रमई काका (1915–1982 ई0सी0) और वंशीधर शुक्ला (1904–1980 ई0सी0) के द्वारा किए गए है।

'कृष्णायन' (1942 ई0सी0) एक महत्वपूर्ण अवधी महाकाव्य हड़का प्रसाद मिश्रा ने भारत के स्वतंत्रता के दौरान कारागार में लिखा था। 2022 में सुश्री डॉ विद्या विंदु सिह को अपने अवधी साहित्य में योगदान के लिए पद्य श्री से सम्मानित किया गया है।

मनोरंजन

मनोरंजन 1961 की फिल्म 'गंगा जमुना' में अवधी भाषा का उपयोग नेतृत्व करते हुए नेताओं द्वारा एक न्यूट्रलाइज्ड रूप में किया गया था। 2001 की फिल्म 'लगान' में भी न्यूट्रलाइज्ड रूप की अवधी भाषा का उपयोगा गया था ताकि दर्शकों को समझ में आ सके। 2009 की फिल्म 'देव डी' में अवधी गीत ''पायलिया'' का उपयोग किया था, जिसे अमित त्रिवेदी ने संगीतबद्ध किया था। टेलीविजन सीरीज 'युद्ध' में अमिताभ बच्चन में अपने अपने डायलॉग के कुछ हिस्से अवधी में बोले जिसे हिंदुस्तान टाइम्स ने प्रशंसा की। अयोध्या के निवासियों और रामानंद सागर की 1987 की टेलीविजन सीरीज रामायण में अन्य छोटे किरदारों के द्वारा भी अवधी भाषा का उपयोग किया गया है।

लोक संगीत

अवध में गाए जाने वाले लोक संगीत के रूप में सोहर, सरिया, ब्याह, सुहाग, गाड़ी, नक्ता, बनरा) बन्ना–बन्नी, आल्हा सावन, झूला, होरी, बारहमासा और कजरी शामिल है।

आल्हा–ऊदल बड़े लड़ैया, चम–चम चमक रही तलवार।

मची खलबली रण में भारी, होने लगे वार पर वार।।

जब–जब दुश्मन रण में आये, टूट पड़े ऊदल तत्काल।

काट–काट सर धूल चटाते, कर रणभूमि रक्त से लाल।।

आल्हा–ऊदल लड़ी लड़ाई, ऊदल तभी भरी हुँकार।

चुन–चुन सारे दुश्मन मारे, ऊदल करते है संहार।।

महाबली ऊदल बलशाली, भीम सरीखे विपुल महान।

सेना जब–जब आल्हा गाये, लड़ने जाये वीर जवान।।

(डॉ प्रवीण कुमार श्रीवास्तव)

बाजे बधाई बाजे, दशरथ महलिया में,

जन जन का लाडू बंटे, जन जन हो,

ए हो आज महलिया में, राम का अन्नप्राशन,

चारों कुमारों का होइहै अन्नप्राशन, होइहै हो।

माता कौशल्या नें, गोद बैठाये राम,

प्रेम से मुख चूमी, लाल का मुख चूमीं लाल का हो,

अरे बार–बार मैया लेत बलैया ताकैं,

राम के माथे का डिठौना हो।

सोने कटोरवा से खीर चटाय दीहीं,

अचरा के कोर पोछीं, मुंहवा के कोर पोछीं, मुंहवा के हो।

एहो राम की बड़ी बड़ी, अंखियां देखें महतारी,

का देखें महतारी का हो।।

अवधी भाषा में साहित्यिक रचनाएं हिंदी क्षेत्र में अपना व्यापक प्रभाव डाल रही है। बहुत से लेखकों ने हिंदी भाषा का मूल अवधी को समझ रहे है। उनकी लेखनी अवधी से विरत नही हो पाई। सामान्यतः

© 2024, IRJEdT Volume: 06 Issue: 08 | Aug-2024

प्रमुख रचयिता और लेखक अपने साहित्य को चरम सीमा तक पहुँचाने में अवधी भाषा का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है जैसे तुलसीदास जी, रहीमदास जी, मलिक मोहम्मद जायसी, प्रताप नारायण मिश्र जी, बलभद्र दीक्षित जी, वंशीधर शुक्ल जी, चन्द्रभूषण द्विवेदी जी, गुरु प्रसाद सिंह इत्यादि प्रमुख हैं। अवधी में मुख्य रूप से संख्याओं एवं विशेषणों के अकारांत रूपों का उकारांत रूपों में प्रयोग किया गया है इस प्रकार का प्रयोग तुलसीदास जी साहित्य में अक्सर किए है तथा अवधी में सर्वनाम के संबंध में कारक रूप तोर, तुम्हार, हमार, कहिकर, जाकर आदि प्रयोग होता है। तुलसीदास जी के 'मानस' में अक्सर प्रयोग किया गया है। अवधी व्याकरण में इन सामान्य नियमों का परिपालन और प्रचलन रहा है जैसे कहै लाग, सुनै लाग, नहाए लाग, जाब देब इत्यादि का प्रयोग बार–बार किया गया है इस प्रकार समस्त लेखकों ने अवधी भाषा का भाव साहित्य में बनाए रखने के लिए अलौकिक और अविस्मरणीय कृत्य किया है जो बहुत ही सराहनीय है।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः–

- Saxena, Baburam (1971), Evolution of Awadhi. Allahabad: Motilal Banarsidas Publication. ISBN 9788120808553.
- Grierson, George Abraham (1904). Linguistic survey of India. Vol. 6 Mediate Group. India office of the Superintendent of Government Printing.
- Singh, Ravindra Pratap (2019), "Nature Climate and self. Reading select texts of Awadhi Barantasa (PDF), Research Journal of English, Vol. 4 no.2 , ISSN-2456-2696.
- Pandey, Jagdish Prasad (2011) Awadhi Granthavali Vol. 5 (in Hindi). India: Vani Prakashan. ISBN 978-81-8143-905-5.
- Tulasidasa (1999) Sri Ramacaritmanasa. Motilal Banarsidass Publ. Page No. 747. ISBN 978-81208-0762-4.
- Orsini Francesca (2014) Dalmia, Vasudha; Faruqui, Munis (eds.), 'Inflected Kathas: Sufis and Krishna Bhaktas in Awadhi', Religious Interactions in Mughal India, Oxford University Press, Page No. 195-232, ISBN 978-0-19-808167-8.
- Vaudeville, Charlotte (1990) 'Kabir's language and languages, Hindui as the language of non-conformity', Indo-Iranian Journal. 33 (4): 259-266 doc.:10.11637/000000090790083572. ISSN 0019-7246.
- Kutuban(2012). The Magic Doc.: Kutuban Suhravardi's 'Mirigavati'. Oxford University Press, USA. ISBN 978-0-19-984292-6.

© 2024, IRJEdT Volume: 06 Issue: 08 | Aug-2024

- Manjhan (2001). 'Madhumalti': An Indian Sufi Romance. OUP Oxford . ISBN 978-0-19-160625-0.
- Lutgendorf, Philip (1991). The Life of a Text: Performing the Ramcaritmanas of Tulsidasa, University of California Press. ISBN 978-0-520 06690-8.
- Masica, Colin P. (1993). The Indo-Aryan-Languages. Cambridge: Cambridge University Press. ISBN 0-521-23420-4, OCLC 18947567.

© 2024, IRJEdT Volume: 06 Issue: 08 | Aug-2024